दृष्टि The Vision

drishti

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	DTVF/19(JS)–ESY-**E1**	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

Name: Alok Prasad **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:**

Center & Date: Mukharjee Nagar 07 July **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 7100

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज़्यादा अवसरों की असमानता है।

   Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.

2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।

   To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.

3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।

   The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.

4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

   If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

"अत्यधिक असमानता आय की असमानता से ज्यादा अवसरों की असमानता है।"

"मैं ऐसे धर्म को नहीं मानता जो समानता का पोषक न हो"

डा. बी. आर. अम्बेडकर जी का यह कथन दर्शाता है कि असमानता का मूल स्वरूप 'आय की असमानता' से इतर धर्मगत और रूढ़िगत मान्यताओं में ही छिपा रहता है और यही असमानता अवसरों की असमानता को जन्म देती है।

आगे हम यही जानने का प्रयास करेंगे कि मानव सभ्यता में असमानता के क्या-क्या स्वरूप विद्यमान रहें है और इनसे किस प्रकार असमानता से पीड़ित व्यक्ति को अवसरों से वंचित किया है। वहीं वर्तमान में बढ़ती आय की असमानता से उत्पन्न अवसरों की असमानता की भी पड़ताल की जाएगी। साथ ही हम यह भी जानेंगे कि असमानता को समाप्त करने हेतु क्या-क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सर्वप्रथम हम असमानता के विविध आयामों पर चर्चा करेंगे। असमानता का ~~बिक्र~~ जिक्र दिमाग में आते ही सर्वप्रथम हमें 'आर्थिक असमानता' का स्मरण होता है। आखिर हो भी क्यों न? जब समाज के 1% व्यक्तियों के पास समाज की 73% से अधिक सम्पत्ति हो। लेकिन आपन की असमानता से इतर कुछ असमानताएँ रहती रही हैं। जिन्होंने आय की असमानता से ज्यादा अवसरों की असमानता उत्पन्न की।

~~सबसे~~ जिसमें सबसे पहले हम लिंगगत असमानता की चर्चा करेंगे। यूँ तो लिंगगत असमानता का चरम स्तर मध्यकाल में दिखाई पड़ता है। किन्तु वर्तमान में भी यह कमोबेश बनी हुई है। 'भारत' का उदाहरण लेकर इसे समझा जा सकता है। हमारे देश में 48% जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएँ करती हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

किन्तु राजनीतिक स्तर पर उनकी हिस्सेदारी मात्र 14% के करीब है। वहीं आर्थिक स्तर पर देखें तो भूमि अधिकार संपत्ति अधिकार में महिलाओं की हिस्सेदारी मात्र 10% के करीब है। महिलाओं को अधिकांश क्षेत्रों में काम करने का अवसर ही नहीं मिलता। अगर आज भी हम बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उच्च पदों पर विद्यमान महिलाओं की गिनती करे तो उनकी संख्या बेहद नगण्य नजर आएगी।

इसी प्रकार कार्यस्थल पर यौन शोषण, समान कार्य हेतु समान वेतन न मिलना/ भी उन्हें अवसरों से वंचित करते है। हाल ही में मी टू मूवमेंट ने भी कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन शोषण की बात उजागर हुई।

समाज के स्तर पर से ही लिंगगत असमानता उन्हें अवसरों से वंचित करती है। कई बार

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तो बच्चियों को पैदा होने से पूर्व ही मार दिया जाता है। और अगर गलती से बच्ची पैदा भी हो जाए तो पोषण में उपेक्षा के द्वारा पुनः कुपोषित करके मौत के करीब ~~____~~ पहुँचा दिया ~~है~~ जाता है। अवसरों से वंचित करने में समाज यही तक नहीं रुकता बल्कि बलात्कार, यौन हिंसा घरेलू हिंसा इत्यादि के माध्यम से उन्हें और उपेक्षित किया जाता है यही कारण है कि महिलाएँ हर क्षेत्र में अवसरों से वंचित है। परिवार के स्तर पर भी बेटी के बजाय बेटे पर धन खर्च किया जाता है। जिसका परिणाम ~~____~~ पितृसत्तात्मकता के रूप में हमारे सामने आता है आज महिलाओं की श्रम बल में भागीदारी मात्र 21.3% ही रह गयी है जोकि अवसरों से वंचितता को दर्शाता है

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

असमानता के एक और रूप जातिगत असमानता में देखा जा सकता है। जातिगत असमानता ने वृहद रूप में निम्न जाति के लोगों को अवसरों से वंचित किया। हालांकि इसकी शुरुआत वैदिक काल से ही हो जाती है जहाँ किसी के व्यक्ति के कार्यों का निर्धारण जातिगत आधार पर होता है। अगर बिना तोड़े मरोड़े कहा जाए तो निम्न जाति अर्थात् शूद्र लोगों को अपवित्र समझे जाने वाले कार्यों हेतु न केवल विवश किया गया बल्कि अन्य क्षेत्रों में उन्हें रोजगार या कार्य करने के अवसर प्रतिबंधित रहे। वर्तमान में स्थितियों में सुधार होने के बावजूद अभी भी जातिगत पहचान निम्न जाति के लोगों को अवसरों से वंचित कर रही है।

उदाहरण हेतु उच्चतर न्यायपालिका तथा प्रशासन के उच्च स्तरों

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation
उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जैसे सचिव पदों पर अगर दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व देखे तो यह नगण्य नजर आता है। ~~तीन~~ हाल ही जारी भूमि संबंधी आंकड़ों में दलितों के पास मात्र 8.61% भूमि का स्वामित्व है जोकि इनकी जनसंख्या प्रतिनिधित्व के तुलना में आधा ही है।

अवसरों की असमानता का आलम यह है कि आज भी कई जगह दलितों को बारात में घोड़ी पर चढ़ने नहीं दिया जाता, तो कहीं आदिवासी मात्र होने से MBBS की छात्रा (पायल) को आत्महत्या करनी पड़ जाती है। तो कहीं दलित डाक्टर से इलाज कराने से मना कर दिया जाता है, तो कहीं दलित होने मात्र से ही भीड़ हिंसा का शिकार होना पड़ जाता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

असमानता की चर्चा करते समय LGBT समुदाय का जिक्र करना बेहद आवश्यक है। हमारे समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को हर स्तर पर प्रताड़ित किया जाता है। उन्हें रोजगार के सभी अवसरों से प्रतिबंधित कर मात्र भीख मांगने को बाध्य किया जाता है। विडंबना यह भी है कि ट्रांसजेंडर व्यक्ति चाहे कितना भी अमीर क्यों न बन जाए वह समाज की नजरों में तिरस्कृत ही रहता है।

अवसरों से वंचित करने वाली इसी असमानता का सामना अल्पसंख्यक धार्मिक समूह को भी करना पड़ सकता है। उदाहरण हेतु पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिंदुओं के साथ होने वाला व्यवहार, अवसरों की कमी इसी श्रेणी में आता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अगला विचारणीय प्रश्न यह भी उठता है कि क्या आय की असमानता अवसरों की असमानता को जन्म दे सकती है। अगर वर्तमान परिदृश्य की बात की जाए तो आय की असमानता के कारण व्यक्ति बेहतर शिक्षा, पोषण स्वास्थ्य से वंचित रह जाता है। जिसका परिणाम होता है कि भविष्य में उन्हें अवसरों से वंचित रहना पड़ता है। उदाहरण के बाढ़ की परिस्थितियों को देखें तो आय की असमानता लगातार बढ़ी है और इससे उत्पन्न अवसरों की वंचना भी।

किन्तु प्रश्न उठता है कि आखिर इन असमानताओं को समाप्त करने हेतु सरकार द्वारा क्या क्या कदम उठाए जा रहे हैं। जहाँ तक आर्थिक असमानता का प्रश्न है तो सरकार मनरेगा, आयुष्मान भारत, पी. डी. एस., अंत्योदय योजना

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

आदि योजनाएँ चला रही है तो वही दूसरी ओर हाल ही में सरकार द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को 10% आरक्षण दिया गया।

जहाँ तक लिंगगत असमानता का बात की जाए तो सरकार बेटी बचाओ बेटी पढाओ जैसे कार्यक्रम के माध्यम से लिंगानुपात सुधारने पर बल तथा सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से पितृसत्तात्मकता को तोड़ने का प्रयत्न कर रही है। इसके साथ ही 'घरेलू हिंसा एक्ट - 2005', 'कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न (निषेध) कानून - 2013' आदि के माध्यम से लिंगगत अपराधो को रोकने हेतु प्रयासरत है।

इसी प्रकार जातिगत असमानता हेतु संवैधानिक प्रावधानों - जैसे अनुच्छेद - 14, 15, 16, 17 आदि के माध्यम से भेदभाव निषेध, शिक्षा एवं नौकरियों में संरक्षणात्मक भेदभाव, छुआछूत उन्मूलन

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

पर कार्य किया गया है। किन्तु अभी भी निम्न जाति के लोगो को समानता के अवसर उपलब्ध कराना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आय की असमानता अवसरों से वंचित रखने में योगदान देती है किन्तु इससे भी कहीं ज्यादा वंचना अत्यधिक असमानता जैसे - लिंगगत असमानता, जातिगत असमानता इत्यादि के कारण उत्पन्न होती है। अतः इस असमानता को दूर करने हेतु न केवल हमें मूल्यों के स्तर पर सुधार करना होगा बल्कि कुछ संरचनात्मक सुधारों को भी अपनाना होगा (जैसे - राजनीति (लोकसभा) में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण) तभी जाकर हम समानता का वह स्वप्न देख पाएंगे जोकि डॉ. B.R अम्बेडकर जी द्वारा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

देखा गया था।

"हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
मेरे सीने में ना सही तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खंड–B / SECTION –B

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।

"The unexamined life is not worth living".

2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।

The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.

3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।

The hands that serve are holier than the lips that pray.

4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

Religion without ethics is like a body without soul.

धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षण है न कि स्वामी

"धूप का जंगल नंगे पाव इक बंजारा करता क्या
रेत का दरिया रेत का जंगल धूप का मारा करता क्या
जंगल जंगल आग लगी है बादल तरसे पानी को
पत्ता - पत्ता सूख चुका है, पेड बेचारा करता क्या

किसी मशहूर शायर की उपरोक्त पंक्तियाँ उन परिणामों को दर्शाती है, जोकि मानव द्वारा धरती का स्वामी मान लेने के कारण उत्पन्न हुई है यह समस्या जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग के बढते प्रभाव से उत्पन्न पृथ्वी पर जीवन

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के संकट से भी जुड़ी है। जलवायु परिवर्तन का ही परिणाम है कि कहीं 'जंगल में आग' लगी है तो कहीं 'बादल पानी को बरस' रहा है।

किन्तु सवाल यह है कि आखिर यह सब हो क्यों रहा है। वस्तुतः हम यह भूल गए हैं कि यह धरती ईश्वर द्वारा प्रदत्त मानवता को उपहार है जिसका हमें संरक्षण करना चाहिए ना कि स्वामी की सोच रख कर उसका अनियंत्रित दोहन।

अगर हम अपने इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह ज्ञात होता है कि औद्योगिक क्रांति से पूर्व मनुष्य धरती का न केवल संरक्षण कर्ता था बल्कि प्रकृति का पूजक भी। वह प्रकृति में होने वाली किसी भी हलचल को ईश्वर का अभिशाप मानकर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इससे बचने हेतु ईश्वर की पूजा करता था। किन्तु समय के साथ यह स्थितियाँ बदलती गयी। औद्योगिक क्रांति के उद्भव ने मनुष्य को प्रकृति का भक्षक बना दिया। कार्ल मार्क्स इत्यादि विद्वानों ने पृथ्वी के भरसक अनियंत्रित दोहन के पक्ष में बातें कहीं।

किन्तु समय का चक्र बदला और इस अनियंत्रित दोहन के परिणाम सामने ~~आने प्रतीत होने~~ आने लगे। तभी ~~से~~ जाकर यह विचार मनुष्य के जहन में उठा कि "धरती ईश्वर की है मनुष्य इसका संरक्षण कर्ता है न कि भक्षक" महात्मा गाँधी जैसे विचारकों द्वारा प्रकृति पर इसी मनोदृष्टि से कहा गया कि

"प्रकृति सम्पूर्ण पृथ्वी के मनुष्यों

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है किन्तु किसी एक व्यक्ति के लालच को नहीं"

वस्तुतः यहाँ यह जानना आवश्यक है कि मनुष्य के पृथ्वी पर अबाधित अधिकार की भावना के क्या - क्या परिणाम सामने आए हैं सतत विकास के बजाय अनियंत्रित दोहन के परिणामों का सिलसिला तो 1950 के दशक में ही दिखने लगता है- जब लंदन की ग्रेट स्मॉग के कारण हजारों लोगों की जान चली जाती है।

लेकिन वर्तमान में इसके परिणाम और तीव्रता से उद्भव होते नजर आ रहे हैं उदाहरण स्वरूप वैश्विक तापन के कारण पृथ्वी का औसत तापमान व लगातार बढ़ रहा है तो दूसरी ओर ग्लेशियर पिघलने से समुद्री

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

जल स्तर में भी लगातार वृद्धि हो रही है परिणाम यह है कि पृथ्वी की जैव विविधता का ह्रास बेहद तेज गति से हो रहा तो वहीं जीवों की विलुप्ति की दर अत्यधिक तीव्रता से बढ़ रही है जिससे यह कयास उत्पन्न हो रहे है कि आखिर धरती का अस्तित्व बचेगा या नहीं।

मनुष्य की इसी सोच का एक रूप जल के असंधारणीय उपयोग में दिखता है हाल ही की नीति आयोग की रिपोर्ट में 60 करोड़ भारतीयों हेतु पेयजल के संकट की बात कही गयी है। अधिकांश शहरों के जलस्रोत सूख चुके है। मनुष्य भौमजल का अनियंत्रित दोहन करते जा रहा है, साथ ही स्वच्छ जल के स्रोतों को प्रदूषित कर रहा है। आखिर इस तरह

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

की सोच का ~~खंडित अंजाम क्या~~ अंजाम क्या होगा।

ज्ञात हो आज से 300-400 वर्ष पूर्व ही रहीम जैसे कवि पानी की महत्ता बता चुके हो तब भी आज का मानव इतना असंवेदनशील कैसे

"रहिमन पानी राखिए बिनु पानी सब सून
पानी गए न उबरे मोती मानुष चून"

आखिर पानी ही मोती (अर्थव्यवस्था) मानुष (जीवन - पेयजल) तथा चून (खाद्य सुरक्षा) का महत्वपूर्ण आधार है किन्तु मनुष्य के अनियमित दोहन ने जल संकट की समस्या उत्पन्न हो गयी है

आखिर कब हम यह समझेंगे कि मानव केवल धरती का संरक्षक मात्र है, स्वामी नहीं हालाँकि धरती को संरक्षित करने के प्रयास तो हमने 1972 से ही

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

शुरू कर दिए किन्तु उसके बहुत बेहतर परिणाम न मिल पाए वियना कन्वेशन, मॉन्ट्रियल प्रोटोकाल, क्योटो प्रोटोकाल तथा नवीनतम पेरिस सम्मेलन (2015) द्वारा वैश्विक स्तर पर कुछ प्रयास तो किए जा रहे है। किन्तु इमें प्रयासो में और तीव्रता लाने की आवश्यकता है।

धरती के संरक्षण हेतु वैश्विक स्तर, राष्ट्रीय स्तर एवं स्वयं के स्तर पर प्रयास किए बिना अगर हम असंधारणीय विकास करते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब 'धूप का जंगल' और 'रेत का दरिया' हमारे सामने होगा।

फलतः वैश्विक स्तर पर पर्यावरण / पृथ्वी के संरक्षण की

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जिम्मेदारी के अहम भाग को विकसित देशों द्वारा उठाना होगा। विकासशील देशों को हरित तकनीक उपलब्ध कराना तथा 'ग्रीन क्लाइमेट फंड' के माध्यम से मदद करनी होगी।

वहीं राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रत्येक देश को सतत विकास के रास्ते पर ही आगे बढ़ना होगा। हालाँकि INDC के माध्यम से प्रत्येक देश इस ओर कुछ अग्रसर है किन्तु इन प्रतिबद्धताओं का समयबद्ध अनुपालन करना आवश्यक है। साथ ही जीवाश्म ईंधन के बजाय नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग, जैव ईंधन, तथा इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग किया जा सकता है कि प्रदूषण कम से कम हो इसके लिए नई-नई तकनीकों पर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

शोध एवं अनुसंधान किए जा सकते है। दूसरी तरह 'पानी का संरक्षण' करना जल संकट से बचने हेतु अति आवश्यक है। जिसका समाधान एक ही है कि हम अनियंत्रित भौमजल दोहन से बचे एवं अधिकाधिक वर्षाजल को संरक्षित करें।

लेकिन असली सफलता हम तभी प्राप्त कर सकते है जब वैयक्तिक स्तर पर प्रयास किए जाए। अनावश्यक ऊर्जा अपव्यय जल अपव्यय को बचाये बिना सामूहिक प्रयास निष्फल हो सकते है। अतः बच्चों में मूल्य के स्तर पर पर्यावरण प्रेम एवं पृथ्वी प्रेम प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है ताकि ना केवल

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

पृथ्वी का संरक्षण हो बल्कि उसक अभिवर्द्धन भी हो।

निष्कर्षत: ! यह स्पष्ट है कि धरती/पृथ्वी मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त उपहार है। जिसका संरक्षण करना उसका कर्तव्य है अन्यथा कवि की कपोल कल्पना की पंक्तियाँ "पत्ता-पत्ता सूख चुका है", तथा 'रेत का दरिया' ~~[illegible]~~ को सच होते समय नहीं लगेगा। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण / पृथ्वी संरक्षण हेतु जो कदम उठाए जा रहे हैं उन्हें और तीव्रता से चलाए जाने की आवश्यकता है। ताकि मनुष्य धरती ~~[illegible]~~ के संरक्षक ~~[illegible]~~ की भूमिका का निर्वाह करें। अन्यथा आपदाओं के स्वरूप में पृथ्वी/प्रकृति को मनुष्य से बदला लेना आता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

है। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि पृथ्वी बाढ़ सूखा चक्रवात सुनामी, भूकंप इत्यादि के माध्यम से प्राकृतिक संतुलन का माद्दा रखती है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation